विशिष्टाद्वैत दर्शन का सामान्य परिचय

→ विशिष्टाद्वैत दर्शन के प्रणेता आचार्य रामानुजाचार्य हैं।

→ रामानुजाचार्य जी का जन्म श्री पेरुम्बुदूर जो कि दक्षिण भारत में स्थित है वहाँ पर 1027 ईसवी में हुआ था।

→ इन्होंने भी प्रस्थान त्रयी (गीता, उपनिषद और ब्रह्मसूत्र) की प्रमाणिकता को स्वीकार किया है।

→ विशिष्टाद्वैत को श्री सम्प्रदाय के नाम से भी पुकारा जाता है।

→ रामानुजाचार्य ने ब्रह्मसूत्र पर 'श्रीभाष्य' नाम का भाष्य है। इसके अतिरिक्त इन्होंने वेदान्तसार, वेदान्त संग्रह, वेदान्त-दीपिका आदि ग्रन्थ तथा गीता पर भाष्य भी लिखा है।

→ रामानुज वैष्णव धर्म के प्रचारक थे। उनका 'श्रीभाष्य' वैष्णव धर्म का महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना गया है।

→ विशिष्टाद्वैत शब्द दो शब्दों से बना है — 'विशिष्ट' और 'अद्वैत'। यहाँ पर अद्वैत से तात्पर्य है जहाँ द्वैत का अभाव हो, अर्थात् जहाँ केवल एक ही सत्ता हो। और यह एकमात्र सत्ता ब्रह्म है।

→ रामानुज ने आचार्य शंकर के मायावाद और अद्वैतवाद के सिद्धांतों का प्रचण्ड खण्डन करते हुए इन सिद्धांतों को तार्किक आधार प्रदान किया।

→ रामानुज के अद्वैत ब्रह्म की विशिष्टा यह है कि, वह शंकर के ब्रह्म के समान निर्गुण, निराकार नहीं है अपितु कुछ विशेषणों से युक्त है। ये विशेषण हैं — चित् तत्व और अचित् तत्व।

→ इनके दर्शन में तीन तत्वों मिलते हैं — ईश्वर, चित् और अचित्

→ चित् आत्मा या जीव को कहा गया है।

→ अचित् चेतनाहीन, प्रकृति या दृश्यप्रपञ्च अर्थात् जड़ जगत् के रूप में स्वीकारा गया है।

→ रामानुज केवल स्वगत भेद को ही मानते हैं।

→ इनके अनुसार जगत् ईश्वर का वाह्य शरीर है।

→ इन्होंने ईश्वर तक पहुँचने के लिए भक्ति को सर्वश्रेष्ठ साधन कहा है। मोक्ष का एकमात्र साधन भी भक्ति ही है।

→ ईश्वर के पाँच रूपों की चर्चा की गई है–

पर, व्यूह, विभव, अन्तर्यामी और अर्चावतार।

→ रामानुज ने केवल सगुण ब्रह्म को स्वीकारा है।

→ रामानुज ने तीन प्रमाणों को स्वीकारा है– प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द। उनके विचार में स्मृति और प्रत्यभिज्ञा का अन्तर्भाव प्रत्यक्ष में हो जाता है और उपमान, अनुपलब्धि तथा अर्थापत्ति प्रमाण का अनुमान प्रमाण में। इसलिए इनको स्वतंत्र प्रमाण नहीं माना जा सकता है।

→ इन्होंने प्रत्यक्ष के दो भेदों को स्वीकारा है– 'सविकल्पक' और 'निर्विकल्पक'

→ रामानुज ने जीवात्मा के तीन प्रकार बताए हैं–

बद्ध जीव, मुक्त जीव और नित्य जीव।

→ कारणतावाद के रूप में इन्होंने 'ब्रह्मपरिणामवाद' (जगत् ब्रह्म का परिणाम है) को माना है।

→ इनके अनुसार, जगत सत्य है न कि मिथ्या।

→ इन्होंने अचित् के तीन भेद किए हैं– (i). शुद्ध तत्व (सतोगुण), (ii). मिश्र सत्व (सत्व, रज, तम से युक्त प्रकृति), सत्व शून्य (काल)।

→ रामानुज ने भ्रम सिद्धांत के रूप में 'सत्ख्यातिवाद' की व्याख्या प्रस्तुत की है।

→ ईश्वर को जगत् का अभिन्ननिमित्तोपादान कारण माना है।

·———×———·